अतीत की ओर...

प्रमिला

माँ से मातृभाषा तक...

वर्ष : 02 , अंक : 07 , अप्रैल – मई 2024

मूल्य : 20 रुपए | पृष्ठ : 4

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

जज्बात के शब्दन में देखावल कला ह।
अपना से अपनही के समझावल कला ह।।

- अवनिश त्रिपाठी

प्रेम शंकर

मौसम के नज़राने

बिहार मूल रूप से एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है, जिसके पास एक बड़ा कृषि और संबद्ध क्षेत्र का उत्पादन आधार है। संबद्ध क्षेत्रों में बागवानी की प्रधानता है। इसकी विविध जलवायु कृषि और बागवानी उत्पादों की सभी किस्मों की उपलब्धता सुनिश्चित करता है और उसमें भी प्रधानता है अलग-अलग मौसमों के अनुरूप उगाए जाने वाले अलग-अलग मौसमी फलों की। जैसे गर्मियों में उगाए जाने वाले मुख्य फल हैं आम, लीची, अमरूद, पपीता, तारकून फल (खाजा), कटहल, जामुन, इत्यादि। वही सर्दियों में पाए जाने वाले मुख्य फल हैं मखाना, गाजर, अलुआ, शकरकंद, पानी फल, नाशपाती, अनानास, मौसमी, नींबू, इत्यादि। । जबकि ठंड में पाए जाने वाले फलों में विटामिन 'सी' की मात्रा अधिक होती है, जिससे की शरीर को गर्म रहने में मदद मिलती है और ये मौसमी फल हर मौसम में हमारे शरीर को सुचारू ढंग से चलने में मदद करते हैं।

मखाना की खेती

अगर बात करें मौसमी फलों के फायदे की, खासकर वह जो पेड़ों पर सूरज की रोशनी में पके हैं उनमें पोषण की मात्रा अधिक होती है और उनका स्वाद आम फलों से ज्यादा अच्छा होता है। यह मौसमी फल स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभदायक और फायदेमंद है। गर्मियों में पाए जाने वाले फलों में पानी की मात्रा अत्यधिक होती है जिससे शरीर की पानी की ज़रूरतें पूरी होती हैं और शरीर ठंडा रहता है। हमें जितना ज्यादा हो सके मौसम के अनुरूप पाए जाने वाले फल खाने चाहिए। मौसमी फलों की उपलब्धता आसान है और वह सस्ते भी होते हैं, क्योंकि इन्हें आसपास के किसान बहुत ज्यादा मात्रा में उगाते हैं और वह आसानी से बिल्कुल ताजा फल हम तक पहुंचाते हैं। मौसमी फल वातावरण के लिए भी बहुत अच्छा है साथ ही ऑफ सीजन इनकी पैदावार करने में किसानों पर भी अत्यधिक दबाव नहीं रहता है।

शाही लीची

आम

केला

अगर हम बात करें बिहार में पाए जाने वाले मुख्य मौसमी फलों की तो उन में आते हैं मुख्यतः-

- शाही लीची: मुजफ्फरपुर में पाए जाने वाली शाही लीची न सिर्फ देश में बल्कि पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा एवं सबसे उन्नत किस्म की शाही लीची है। इसे मुजफ्फरपुर में किसानों द्वारा तीन लाख हेक्टेयर में 18 लाख टन हर साल उगाया जाता है।

- आम (मालदा एवं जर्दालू): भारत के अलग-अलग हिस्सों में बहुतेरों प्रकार के आम पाए जाते हैं लेकिन बिहार में पाए जाने वाले मालदा और जर्दालू कि बात ही अलग है। इसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता।

- केला: तीसरा स्थान हाजीपुर में पाए जाने वाले केले की है। सर्वाधिक केला उत्पादन में बिहार देश में सातवें स्थान पर आता है।

वहीं कुछ ऐसे फल भी हैं जो बाजारों में आम तौर पर नहीं मिलते लेकिन बिहार के गांव में लोग इन्हें बड़े चाव से खाते हैं जैस कुद्रुम, खीरी, तूत,खाजा, इत्यादि। इन सब में मेरा पसंदीदा है सर्पिले हरी-गुलाबी फली में छोटे मीठे खाने योग्य गुद्दे वाली जंगली जलेबी । उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार बिहार लीची और मखाने का सबसे बड़ा उत्पादक, अनानास का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक, और आम का चौथा सबसे बड़ा उत्पादक है।
जैसा कि हम देख रहे हैं देश में लीची, मखाना, आम, केला और अनानास के उत्पादन एवं बिक्री में बिहार का एकाधिकार है और यहां की मौसम, मिट्टी और जलवायु तीनों ही मौसमी फलों के उत्पादन के अनुरूप है।

इन प्राकृतिक लाभों के बावजूद बिहार में प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन का स्तर बहुत कम है और राज्य की बढ़ती जनसंख्या के अनुरूप बढ़ती आवश्यकता को पूरा करने के लिए एवं कृषि अर्थव्यवस्था को सुद्धिर बनाने के लिए इसमें सुधार की गुंजाइश है।

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में...

1817: समाज सुधारक देवेन्द्र नाथ टैगोर का जन्म।

1923: जॉनी वॉकर, भारतीय हास्य अभिनेता का जन्म।

अधूरी बारिश की टीस

रितेश आदर्श

तो कुल मिला कर बात इतनी सी है कि बिहार में लड़ाई दो तबकों के बीच है, एक तरफ यह विलायती गाड़ियां हैं तो दूसरी तरफ बिहार की जनता और बिहार की नदियां हैं। इस झगड़े में मॉनसून अमेरिका और नेपाल के पहाड़ चीन हो गए हैं, जिनकी वजह से बिहार की नदियां और जनता दोहरी मार झेल रहे हैं। बिहार समृद्ध साम्राज्यों का पिता रहा है। यह मिट्टी भारतीय उपमहाद्वीप के कई संस्कृतियों की जननी रही है। उस समृद्धि के हृदय में मॉनसून और नदियां रही हैं। 500 ईसा पूर्व से 2024 तक लाने में; पंचाने, फल्गु, पुनपुन, गंगा, गंडक, घाघरा, कोसी, महानंदा, सोन से लेकर डबरा, घाघरा, कर्मनाशा, मेची, बलान तक में बिहार के मॉनसून और नदियों की भूमिका रही है। इन नदियों ने बदलते समय के साथ बदलते साम्राज्य देखे, बदलती जमीन देखी, पर अब नदियों का खुद समय आ गया है।

बि

हार के संदर्भ में साल का सबसे महत्वपूर्ण मौसम बसंत नहीं होता है और न ही कश्मीर और हिमाचल की तरह सर्दियां महत्वपूर्ण होती हैं। बिहार को ना आम के पकने का इंतजार रहता है और न ही आसमान छूती टमाटर की कीमतों का मलाल होता है। बिहार की सच्ची मोहब्बत मॉनसून है। जब मैं बिहार कहता हूं तो मेरा मतलब ककड़बाग में हांफती विलायती गाड़ियों से नहीं होता। मेरा मतलब उन जड़ों से होता है जिसके मूल में गंगा है, नदियों द्वारा सिंचित और पोषित उर्वर मिट्टी है। अगर मैं बिहार की नदियों को हमारी संस्कृति का मूल कहूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। छठ महापर्व इसका जीता जागता उदाहरण है। नदियों के प्रति हमारी बदलती जिम्मेदारियों के बीच मॉनसून भी अपनी जिम्मेदारियों से मुकरने लगा है। अब नदियों के पास न तो बारहमासा पानी है और न उस पानी को संजोने लायक जमीन बची है। बिहार के लोग और बिहार की नदियों में टिकने वाले पानी दोनों की नियति एक हो गई है। जैसे दिल्ली मुंबई की ट्रेनों में बेतहाशा लोग लदकर बिहार की तरफ आते हैं, नदियां भी नेपाल से उसी तरीके से लदी आती हैं। जब ये ट्रेन और नदियां दोनों पटना जंक्शन पहुंचती है तो विलायती गाड़ियों के पहिए जमीन छोड़ने लगते हैं। कई बार यह विलायती गाड़ियां हवाई जहाज से सर्वेक्षण के बहाने तो कई बार किटी पार्टीज के कारण भी जमीन छोड़ने को मौके ढूंढ लेती हैं।

बिहार में इस मॉनसून, कई जिलों में 30 प्रतिशत से कम बारिश हुई है, जिसका परिणाम है कि धान की खेती पर इसका बुरा असर पड़ा है। दूसरा परिणाम है कि बिहार ने इस मॉनसून की देरी से अप्रत्याशित लंबा हीटवेव का दौर देख लिया है।

नतीजा यह है विलायती गाड़ियों और घरों के एसी फटने की खबरें आई हैं। पीने के पानी की किल्लत और गिरते भूमिगत जलस्तर से बोरिंग फेल होने की दरों में अप्रत्याशित बढ़ोतरी दर्ज हुई है। मिडिल क्लास के वो मुहल्ले जो दस पन्द्रह साल पुरानी बॉल बेयरिंग पर पंखे घिस रहे थे, अचानक एसी की दुकानों में ताका झांकी कर रहे हैं। यह अधकुचले लोग एटीएम से पंद्रह मिनट में 100 रुपए निकाल कर मौज उड़ा रहे हैं। विंडो शॉपिंग के बहाने मॉल से बाहर निकलने का नाम नहीं ले रहे। इनके बैंक और अस्पतालों में इंक्वायरी सेशन चल रहे हैं।

इस साल मॉनसून 03 जून से अगले दो हफ्ते तक बंगाल बिहार की सीमा पर अटका रहा। बिहार की खुशियों को अचानक नजर लग चुकी थी। इस मॉनसून की बेरुखी का असर व्यापक और गंभीर है। हम नेपाल और उत्तराखंड से आने वाली नदियों के अप्रत्याशित डिस्चार्ज वॉल्यूम का डंपिंग ग्राउंड नहीं है। हमारे राज्य की सबसे बड़ी संपति जल है, और

यह जल हमारे आसमान से हमारे जमीन के हर को हिस्से नसीब होना चाहिए। कितने आश्चर्य और दुख की बात है कि 70 प्रतिशत बाढ़ प्रभावित राज्य पानी की किल्लत का हर साल सामना करने को बाध्य है। ग्राउंड वाटर लेवल रिचार्ज और नदियों में बारहमासा पानी उपलब्ध कराए जाने को लेकर न राज्य सजग है और न यहां की जनता सजग है। धार्मिक मूल्यों की रक्षा नदियों में डुबकी लगाने से ज्यादा इस बात पर जोर देने में है कि नदियों को वापस डुबकी लगाने लायक बनाया जा सके, और यह उपलब्धता हर दिन, हर महीने हो। बिहार अगले साल फिर मॉनसून का इंतजार करेगा, इस उम्मीद से कि चढ़ती उतरती नदी पीछे छोड़ जाएगी उर्वरता उपजाऊ मिट्टी और नदियों से दूर बसे गांव भी अपने हिस्से की उर्वरता संजोए रख सकें।

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में...

1854 : देश का पहला डाक टिकट कोलकाता में जारी हुआ था।

1967 : ज़ाकिर हुसैन भारत के पहले मुस्लिम राष्ट्रपति बने।

बिहार में बड़े स्तर पर होगा 'लौंगन' फल का उत्पादन

आकांक्षा राज

बिहार का चौथा सबसे बड़ा शहर पुर्णिया, अपनी एक मौसमी फल के लिए खासा लोकप्रिय है। यह फल है, ताड़ का फल जो की गर्मियों में तरोताजा रखने में बहुत मदद करता है। स्थानीय लोग इसे तारकून के नाम से भी जानते है। ताड़ का पेड़ साल में एक बार ही फल देता है। वहीं सिवान जिले में होती है सेब और आड़ू फल की बागवानी।

ताड़ (तरकुल) और आड़ू फल के पेड़

ये फल पोषक तत्वों से भरे हुए है, जो शरीर को बहुत लाभ पहुंचाते है। इन फलों में आपको कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, फाइबर, कैल्शियम, पोटेशियम, शुगर, मिनरल्स और फाइबर प्रचुर मात्रा में मिल जाएगी। इसीलिए लोग इन फलों को अपनी रेगुलर डाइट में शामिल रखते है। डॉक्टर्स भी इन फलों को खाने की सलाह देते है। गर्मियों के मौसम आते ही, सड़को पे जामुन दिखने लगते हैं। जामुन को लोग बड़े ही शौक से खाते है, साथ ही ये हमारे सेहत के लिए भी काफी फायदेमंद है।

आमतौर पर बिहार में काले जामुन मिलते है, लेकिन अब बिहार के मुजफ्फरपुर में व्हाइट थाई जामुन की खेती की जा रही जो की लोगों को काफी भा रही है और लोग बड़े ही चाव से इसका लुफ़्त उठा रहे हैं।

नागपुरी संतरे का पेड़

सारण जिले के किसान पारंपरिक खेती के साथ कुछ नए फसल पर भी अजमाइस कर रहे हैं। छपरा में अब नागपुर के संतरे का भी खूब फलन हो रहा है। यहां के संतरे बाकी जगह की अपेक्षा अधिक मीठे हैं, जिसके वजह से मार्केट में इसकी डिमांड अधिक है।

बिहार के बाजार मौसमी फलों से भरे हुए रहते है। यहां के जलवायु और उपजाऊ मिट्टी के कारण यहां कई मौसमी फल उगाए जाते हैं। गर्मियों के मौसम में भारत का पूरा मैदानी भाग गर्मी से विचलित रहता है, ऐसे में मौसमी फल किसी खजाने से कम नही होते। इस कुदरत के खजाने में होते हैं कई पोषक तत्व जो देते है गर्मियों में राहत और रखते है स्वस्थ्य। तापमान बढ़ते ही मौसमी फलों की मांग भी बढ़ जाती है। खुद को तरोताजा और स्वस्थ्य रखने के लिए लोग मौसमी फलों का इस्तेमाल करते हैं। वैसे तो आम फलों का राजा है लेकिन गर्मी के मौसम में लोग लीची भी बड़े चाव से खाते है। लीची का जिक्र हो और बिहार की चर्चा न हो,ऐसा तो संभव ही नहीं है। बिहार के मुजफ्फरपुर की लीची दुनिया भर में काफी मशहूर है। लेकिन अब लीची जैसी दिखने वाली **"लौंगन"** फल को भी लोग जानने लगे हैं। राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र मुशहरी में लौंगन के पौधे को एक प्रयोग के तौर पर लगाया गया था और अब यहां लौंगन का उत्पादन बड़े स्तर पर होने लगा है।

भोजपुरी विशेष

भोजपुरी ग़ज़ल

कब से सफर पर बानी पता कब आई
हमरा हिस्सा में मांगल दुआ कब आई

दिल के भीतर जवन एगो शोर बा
ओकरा बोले - चाले सदा कब आई

नींद के अतना बेरुखी रहल आँखिन से
ना जाने रातिन में लपेटल सबेरा कब आई

- सोनू किशोर

भोजपुरी गीत

केने जात बारू तू नयना लड़ा के
मनवा में हमरी चाहत जगा के
अइसे ना देखअ तू मुस्का के
दूर कइसे होखब करीब हम आके

चान जइसन चेहरा दिल में उतर गइल
बिखरल जिनगी फिर से सँवर गइल
लाई द बहार हमके अपना के
केने जात बारू तू नयना लड़ाके

करी विशवास कइसे तोहपे अनजाना
करी विरोध जब ज़ुल्मी जमाना
भाग त ना जइबअ तूही डेरा के
दूर कइसे होखब करीब हम आके

- अनजाना

भोजपुरी ग़ज़ल

जज्बात के शब्दन में देखावल कला ह।
अपना से अपनही के समझावल कला ह।।

रुसे के त बिना बात रिसिया जाला लोग।
खिसियाइल के जल्दी मनावल कला ह।।

दुःख सुख जीवन में कुल मिलत रही।
खाके धोखा जिनगी चलावल कला ह।।

काम परला पर आपन चिन्हा जाई।
फरहर बन के सबके अजमावल कला ह।।

निक भा बाउर अवनीश लिखबे करी।
सोच समझ के ताली बजावल कला ह।।

- अवनिश त्रिपाठी

साहित्य मासिक

घनश्याम

श्याम से सावन तक...

वर्ष : 02 , अंक : 07 , अप्रैल – मई 2024

मूल्य : 20 रुपए

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

न हो ऐसे तू ज़ेहन–ओ–दिल पे हावी
तू मेरा इश्क है, दुनिया नहीं है।

- प्रखर 'पुंज'

ग़ज़ल

ये दिल अंजाम तक पहुंचा नहीं है।
ये कोई आम सा रस्ता नहीं है।

मरेगा कौन कब किरदार कैसे
किसी को भी ये अंदाज़ा नहीं है।

जो प्यासे रह गए उनकी नज़र में
ये दुनिया दश्त है दरिया नहीं है।

किसी आज़ार का मारा है ये दिल
मगर होठों से कुछ कहता नहीं है।

नहीं आंसू मेरे चेहरे पे ज़ाहिर
मगर दिल अब तलक संभला नहीं है।

न हो ऐसे तू ज़ेहन-ओ-दिल पे हावी
तू मेरा इश्क़ है दुनिया नहीं है।

हमें चाहत है उस मंज़िल कि जिसके
सफ़र में एक भी रस्ता नहीं है।

- प्रखर पुंज

काली बदरिया

घन-घोर घटा काली बदरिया
बस अंखियन में प्रेम रे
चल दियो सब छोड़ी-छाड़ी
अब काहू को देर रे
देख लीहू जो इक वारी,
चित चोर नैन रे
मिल जायो,तुलसी हृदय में चैन रे

घन-घोर घटा काली बदरिया
बस अंखियन में प्रेम रे
निश्छल प्रेम बीच पर्वत ,लगिहें राई
नदी बनीहें रेत रे
पार करत जो मिलहें शैय्या
मनवा कहिहें,काठ मिलल
तुलसी पानी खेव रे
देख लीहू जो इक वारी,
चित चोर नैन रे
मिल जायो, तुलसी हृदय में चैन रे

घन-घोर घटा काली बदरिया
बस अंखियन में प्रेम रे
चल दियों सब छोड़-छाड़ी
अब काहू को देर रे
निश्छल प्रेम बीच काहे को कवनो केवडिया
नाहीं कवनो ऊँची टेक रे
नाहीं खोजत रेशम रसरिया
चढ़ गयो, तुलसी प्रेम अटरिया
पकड़ी अजगर देह रे

घन-घोर घटा काली बदरिया
बस अंखियन में प्रेम रे
चल दियो सब छोड़- छाडी
अब काहू को देर रे
देख लीहू जो इक वारी
चित चोर नैन रे
मिल जायो, तुलसी हृदय में चैन रे

- रानी कुमारी

पाठकों का प्रेम

विक्की सोनी
(छात्र)

पत्रिका की शुरुआत को एक ऐतिहासिक प्रयास के रूप में सदा के लिए याद रखा जाएगा। ये हमारे जमीन से जुड़ा हुआ एक सार्थक प्रयास है जिसमे अनेको चीज़ों को बहुत अच्छे से प्रदर्शित किया गया है। युवा लेखकों के लिए एक बेहतरीन मंच है। भोजपुरी भाषा पर पत्रिका अच्छा काम कर रही है, सबको इससे जुड़ना चाहिए।

गौरभ पाण्डेय
(शिक्षक)

आज के इस आर्थिक युग में लोग आधुनिकता की चकाचौंध में रचनात्मक चिंतन और लेखन से दूर होते जा रहें हैं । ऐसे में इस पत्रिका के कार्यकारी सदस्यों के द्वारा युवाओं को लेखन से जोड़ना, "गागर में सागर" के समान है और मैं आशा करता हूं की भविष्य में और भी युवा इस पत्रिका के माध्यम से अपने अनमोल विचार को समाज तक पहुंचाने के लिए प्रेरित होंगे तथा अपने रचनात्मक ज्ञान कौशल का विकास करेंगे।

अनुपमा बैरागी
(गृहिणी)

'प्रमिला' पत्रिका के जरिए महेंद्र मिश्र जी के बारे में जानकर ऐसा लगा कि मैं क्या कहूं? वो तो अनेक प्रतिभा के धनी थे, खासकर संगीत। उनकी संगीत से तो जेलर भी प्रभावित हो गए। उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों की मदद भी की। ऐसे अपनी मातृभूमि और मातृभाषा से प्रेम करने वाले व्यक्तित्व को दिल से सादर नमन। पत्रिका को पढ़ कर बिहार की मिट्टी से जुड़ने का एहसास सुखद है।

शुभम पाण्डेय
(अधिकारी, रेविन्यू डिपार्टमन्ट)

बहुत बढ़िया लेख बाटे 70 के दशक के लोग आज के मुकाबला मे खान पान के मामला में बहुत जागरूक रहे, ओ टाइम के फास्टफूड मडुआ, जौ, मकई के रोटी और शुद्ध घी रहे जौना के सेवन कइला से शरीर हमेशा स्वस्थ और निरोग रहे। हर कोई के ई लेख के कथन के समझें, पढ़े के चाही और स्वस्थ रहे खातिर घर के खाना खाए के चाही।

प्रधान संपादक : अभिनंदन द्विवेदी | सहायक संपादक : अभिनंदन पाण्डेय, अलबेला, चित्रांश श्रीवास्तव, कुलदीप तिवारी | संपादक मंडल : विक्की, शुभम सोनी, अंकित शर्मा | संपादकीय कार्यालय : पिठौरी, बनियापुर, सारण – 841301, बिहार | अपनी रचना हमें भेजे : rachnakosh.editor@gmail.com